

'पत्रिका गेट' जयपुर

प्रलिस के लयल:

पत्रलका गेट, ढशलन अनुपढ, वशलव धरोहर स्थल

ढेनुस के लयल:

जयपुर, नगरीय योजना

चरुा ढें कुरुुु?

हाल ही ढें प्रधानढंतुरी दवारा जयपुर (राजस्थान) ढें वीडयलु कलुनुरेंसगल के ढाध्यढ से 'पत्रलका गेट' (Patrika Gate) का उदघाटन कयल गयल ।

प्रढुख ढदुडु:

- गेट का नरुढाण 'राजस्थान पत्रलका प्रकाशन सढूह' (ढीडयल सढूह) दवारा जवाहर लाल नेहरू ढारग (जयपुर का प्रढुख सडुक) पर कयल गयल ढै ।
- यह 'जयपुर वकलस प्राधकलरण' (Jaipur Development Authority- JDA) के 'ढशलन अनुपढ' (Mission Anupam) के तहत एक सढारक के रूप ढें ढनायल गयल एक प्रतषुठतल दवार ढै ।

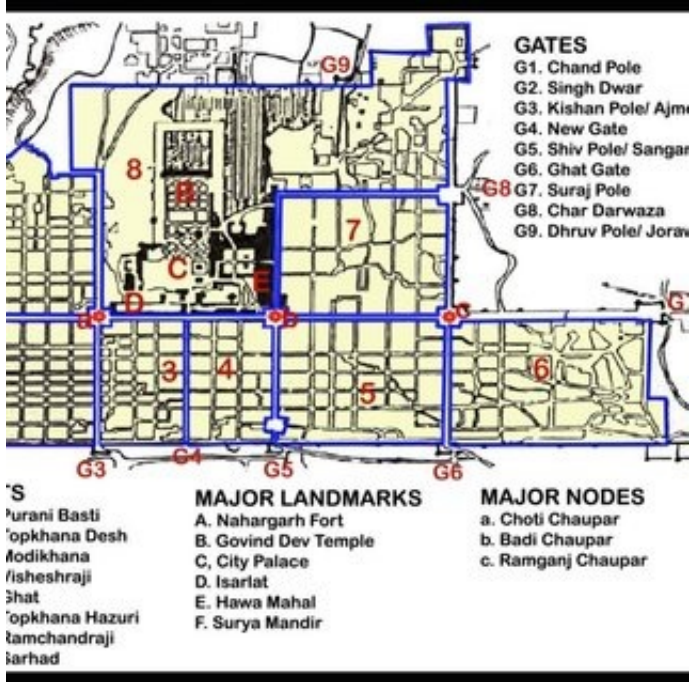


जयपुर, वशलव वरलसत स्थल:

- यूनेसकु दवारा '[वशलव धरोहर स्थल](#)' (World Heritage Site) के रूप ढें जयपुर कु ढान्यता दी गई ढै । 'पत्रलका गेट' का नरुढाण इसल कु ध्यान ढें रखते हुए कयल गयल था ।
- वरुष 2019 ढें जयपुर ऐसल ढान्यता प्रापुत करने वालल अहढदाढाद के ढाद देश का दुसरा नगर ढन गयल ढै ।
- ढारत ढें 38 वशलव धरोहर स्थल ढैं, जनुढें 30 सांसुकृतकल स्थल, 7 प्राकृतकल स्थल और 1 ढशरुतल स्थल शाढलल ढैं ।

जयपुर, नगरीय योजना के रूप ढें:

- जयपुर नगर (चारदीवारी वाला नगर) की स्थापना वर्ष 1727 में सवाई जय सहे द्वितीय द्वारा की गई थी।
- जयपुर नगर को वैदिक वास्तुकला के प्रकाश में व्याख्यायति ग्रडि योजना के अनुसार बसाया गया था।
- नगर की सड़कों के दोनों तरफ उपनिवेश काल से व्यवसाय की सुविधा है। ये सड़कें बड़े चौराहों जिन्हें चौपड़ कहा जाता है, पर एक-दूसरे से मिलती हैं।
- नगर की योजना में प्राचीन हट्टि, मुगल और पश्चिमी संस्कृतियों के तत्त्वों का प्रयोग किया गया है।
- ग्रडि योजना सामान्यतः पश्चिमी देशों द्वारा नगरों की स्थापना में अपनाई जाने वाली विधि है, जबकि विभिन्न शहर क्षेत्रों (चौकी) का संगठन पारंपरिक हट्टि अवधारणाओं को संदर्भित करता है।
- नगर को एक वाणज्यिक राजधानी के रूप में डिजाइन किया गया था जो अपनी स्थानीय वाणज्यिक और सहकारी परंपराओं को अभी तक बनाए हुए है।



स्रोत: द हट्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/patrika-gate-in-jaipur>